IJAER/ Jan-Feb 2023/Volume-12/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में हिन्दी विषय के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

पूनम सिंह	**डॉ. वी. के. शर्मा**
शोध छात्रा	**शोध पर्यवेक्षक**
शिक्षक -शिक्षा संकाय	**प्रोफेसर – शिक्षा संकाय**
ग्लोकल विश्वविद्यालय,	**ग्लोकल विश्वविद्यालय,**
सहारनपुर (उ0प्र0)	**सहारनपुर (उ0प्र0)**

सारांश – प्रस्तुत अध्ययन में **माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में हिन्दी विषय के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन** किया गया है । इस अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित हिंदी विषय के अध्यापकों के मध्य सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता की तुलना करना है जिससे यह ज्ञात किया जा सके कि कौन से अध्यापक सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति अधिक जागरूक हैं तथा किन अध्यापकों को जागरूक करने की आवश्यकता है । प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसन्धान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है । प्रस्तुत अध्ययन में समग्र के रूप में सहारनपुर जनपद में स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत हिंदी विषय के अध्यापकों का चयन किया गया है । प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रूप में **सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी जागरूकता प्रश्नावली** का प्रयोग किया गया है । आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु माध्य, मानक विचलन, डंददऀपजदमल ¬ जमेजए ।छव्ट। तथा प्रतिशत विश्लेषण विधियों का प्रयोग किया गया है । अध्ययन के निष्कर्ष प्राप्त हुए – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित हिन्दी अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर है। तथा प्रशिक्षित हिन्दी अध्यापक, अप्रशिक्षित हिन्दी अध्यापकों की तुलना में आईसीटी के प्रति अधिक जागरूक हैं।

की–वर्ड – माध्यमिक स्तर, हिन्दी शिक्षक, प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, जागरूकता ।

प्रस्तावना

किसी भी देश की शिक्षा, शिक्षा की प्रथाओं की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। वैदिक युग में भारतीय शिक्षा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के लिए प्रसिद्ध थी । भारत में शिक्षा ने, वैदिक युग में शुरू होने से लेकर स्वतंत्रता के बाद की अवधि तक विकास के विभिन्न चरणों का पालन किया। विकास के सभी चरणों में, शिक्षा में व्यावहारिक पहलुओं पर गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा लाने की चिंता थी।

21 वीं शताब्दी में शिक्षण और सीखना पहले के समय से काफी अलग होना चाहिए, क्योंकि शिक्षण और सीखना ऑनलाइन दुनिया में अब तेजी से हो रहा है। परंपरागत रूप में, सीखने के वातावरण आमने–सामने पहुचने तक सीमित थे या जहां दूरस्थ शिक्षा की व्यवस्था थी वहां मुद्रित संसाधनों का वितरण और संचार अक्सर धीमा और बोझिल था।

आईसीटी, सूचना संचारित करने के लिए प्रयुक्त तकनीकी, उपकरण और संसाधनों की एक विविध श्रृंखला है और इसका उपयोग सूचनाओं को बनाने, प्रसारित करने, संचय करने और प्रबंध करने के लिए उपयोग किया जाता है। आईसीटी विद्यार्थियों की शिक्षा को बढ़ाने में बड़ी संभावनाएं और फायदे प्रदान करता है (लोपेज़, 2003)

पहला, यह कि सूचना और संचार प्रौद्योगिकी इंटरैक्टिव लर्निंग अनुभवों के प्रावधान के माध्यम से सीखने के लिए एक रचनात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती है।

दूसरा, आईसीटी के माध्यम से सीखना अधिक प्रभावी है क्योंकि वे कई तकनीकों (वीडियो, कंप्यूटर, दूरसंचार इत्यादि) के अवसर प्रदान करते हैं। जो अंतरराष्ट्रीयकरण और कठिन अवधारणाओं और प्रक्रियाओं में विजुअलाइजेशन साधन प्रदान करते हैं। यह सिद्धांत और अभ्यास के बीच संबंध स्थापित करने के अवसर प्रदान करता है।

तीसरा, आईसीटी छात्रों के लिए मूल्यवान कंप्यूटर कौशल हासिल करने के अवसर प्रदान करता है, जो आज के नौकरी बाजार में उपयुक्त है। आईसीटी संसाधनों के प्रदर्शन के साथ विद्यार्थियों में शिक्षण को भी बढाता है। विद्यार्थियों के पास वर्तमान और अप–टू–मिनट की जानकारी तक पहुंचाता है।

हिन्दी सीखने में आईसीटी की भूमिका

मानव के सभी क्रियाकलापों को भाषा ही संचरित करती है। बालक बचपन से ही अपने परिवार तथा सामाजिक परिवेश से भाषा सीखना आरम्भ कर देता है। बाद के विद्यालयी जीवन में वह अपनी भाषा को परिष्कृत करता है। भारत के सभी विद्यालयों में हिन्दी विषय की पढ़ाई बहुतायत हो रही है। इसमें वे सभी विद्यालय शामिल है जिनमें या तो शिक्षा का माध्यम हिन्दी है या तो अंग्रेजी। व्यावहारिक रूप से संसार में वही व्यक्ति सफल हो सकता है जो लिखकर अथवा बोलकर अपने विचार दूसरों के समक्ष भली –भांति रख सके तथा दूसरे के विचारों को लिखित अथवा मौखिक रूप में सुनकर उनका ठीक ठीक अर्थ लगा सके। इस योग्यता की प्राप्ति में माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी अध्यापकों की अहम् भूमिका है।

हिन्दी शिक्षण में आईसीटी के कार्य – 17

- हिन्दी भाषा के चार कौशलों–सुनना, बोलना, पढना व लिखना का समुचित विकास माध्यमिक स्तर पर बेहतर तरीके से किया जाता है। सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी इन कौशलों को प्राप्त करने में साधन का कार्य करता है। वर्तमान तकनीकी युग में शिक्षण से सम्बंधित बहुत सारे उपकरण शिक्षण उपलब्धि को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रहे है।

- आधुनिक तकनीकी ने हिन्दी भाषा, साहित्य की जटिलता को बहुत हद तक कम करके उसे रोचक और प्रभावशाली बना दिया है। एन.सी.ई.आर.टी. और सी.आई.ई.टी. के सहयोग से माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रमों को डिजीटल स्वरुप प्रदान किया गया है, जो कि विद्यार्थियों के विभिन्न लक्ष्यों यथा शुद्ध उच्चारण, वर्तनी की शुद्धता, स्वरों में उतार –चढ़ाव, को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। कविता, कहानी, उपन्यास का एनिमेटेड स्वरुप निर्मित किया गया है जो कि शिक्षा र्थियों की तत्परता और सीखने के स्तर में वृद्धि करता है।

- तकनीकी सहयोग से आज हर विषय की पाठ्य सामग्री ऑनलाइन उपलब्ध है जिसका निर्माण शिक्षार्थियों को केन्द्रित करके किया गया है। ई–पाठशाला के अस्तित्व में आने से विद्यालयी शिक्षण और अधिक समृद्ध हुआ है। हिन्दी शिक्षण के क्षेत्र में इन तकनीकियों के विकास में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका बढ़ी है जो पूरी शिक्षण प्रक्रिया को निरंतर गतिशील और क्रियाशील बनाता है।

आईसीटी के उपयोग से शिक्षक को शिक्षण के विभिन्न तरीकों का उपयोग करने में मदद मिलती है। छात्र और शिक्षक इस प्रकार माध्यमिक अध्ययन के विषय के रूप में हिन्दी साहित्य के शिक्षण में, पुराने तरीके से नए आईसीटी उपकरण को जोड़कर एक लंबा सफर तय कर सकते हैं। इसके अलावा आईसीटी हिन्दी शिक्षण के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान में भी मदद करता है। आईसीटी उपकरण छात्रों को उनके पाठ को सीखने में मदद कर सकता है और उनकी दक्षता में सुधार कर सकता है। आईसीटी उपकरण छात्रों को जागरूक और प्रभावी बनाने में मदद कर सकता है।

पूर्व में किये गए अध्ययनों से ज्ञात होता है –

सोलाची (2009) ने तमिलनाडु के एक जिले में माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षा तकनीकों की उपलब्धता तथा उपयोगिता का अध्ययन किया।

अध्ययन के मुख्य परिणाम इस प्रकार थे–

1. शिक्षा तकनीकों का उपयोग ग्रामीण विद्यालयों की अपेक्षा शहरी विद्यालयों में अधिक हो रहा है।
2. सहायता प्राप्त विद्यालयों की अपेक्षा राजकीय विद्यालयों में शिक्षा तकनीक का अधिक प्रयोग हो रहा है।
3. कन्या विद्यालयों के अपेक्षा बालक विद्यालय शिक्षा तकनीकों का अधिक उपयोग कर रहे है।
4. मानविकी अध्यापक की अपेक्षा विज्ञान के अध्यापक शिक्षा तकनीकों का अधिक प्रयोग कर रहे है।

कुमारन एवं सेल्वा (2012) के अध्ययन का मुख्य विषय कंप्यूटर के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना था। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ज्ञानात्मक और बोधात्मक स्तर पर कंप्यूटर के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना था। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष में पाया गया कि कंप्यूटर के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण अनुकूल है।

कुमार (2015) के अध्ययन का मुख्य विषय था ''शैक्षिक मीडिया के उपयोग में समस्या और भविष्य''। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य भारतीय कृषि विश्वविद्यालयों में कक्षा शिक्षण के दौरान मीडिया के उपयोग से उत्पन्न समस्याओं की खोज करना था। उन्होंने अपने अनुसंधान में यह निष्कर्ष पाया कि–

1. अधिक से अधिक शिक्षक अनुदेशात्मक माध्यमों के प्रयोग से अत्यधिक परिचित है।
2. कुछ शिक्षकों ने मीडिया संचालन की क्षमता प्राप्त की है।
3. केवल कुछ शिक्षक में ही मीडिया उत्पादों के उपयोग की अभिक्षमता विकसित कर सके है।
4. अधिकतर शिक्षक चौक बोर्ड को ही सहायक सामग्री के रूप में उपयोग कर रहे है।
5. लगभग 79 प्रतिशत शिक्षक अन्य माध्यमों जैसे चार्ट, पोस्टर आदि का कक्षा शिक्षण में प्रयोग करते है

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में हिन्दी विषय के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन की आवश्यकता

कोई भी राष्ट्र अपनी मातृभाषा को पूर्णतः सार्वभौमिक बनाए बिना उन्नति नहीं कर सकता है। इसलिए आज ऐसे अध्ययन की आवश्यकता है जो यह देख सके कि हिन्दी शिक्षकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता एवं शिक्षण प्रभावशीलता की क्या स्थिति है। तथा यह भी देखने की आवश्यकता है कि हिन्दी शिक्षक, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रहे हैं अथवा नहीं कर रहे हैं। जिसके आधार पर उक्त क्षेत्र में उपयुक्त सुझाव एवं प्रेरणा दी जा सके।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में हिन्दी विषय के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

शोध परिकल्पना

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित हिन्दी अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर है।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या में उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जनपद में स्थित केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं यूपी बोर्ड द्वारा संचालित सरकारी और निजी विद्यालयों में हिन्दी विषय का अध्यापन करने वाले प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों को लिया गया है।

प्रतिदर्श का प्रारूप

प्रस्तुत अध्ययन के प्रतिदर्श के रूप में सहारनपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं यू पी बोर्ड द्वारा संचालित विद्यालयों में हिन्दी विषय का अध्यापन करने वाले 232 शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रूप में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी जागरूकता प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

आंकड़ो के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन, डंददीपजदमल ¬ जमेजए ।छव्ट। तथा प्रतिशत विश्लेषण शामिल है।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में हिन्दी विषय के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

परिकल्पनाएँ

भ1 प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित हिन्दी अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर है।

भ्व1 प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित हिन्दी अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

प्रशिक्षण के आधार पर शिक्षकों का वितरण

तालिका

प्रशिक्षण के आधार पर शिक्षकों का वितरण	शिक्षकों की संख्या
प्रशिक्षित	195
अप्रशिक्षित	37
कुल	**232**

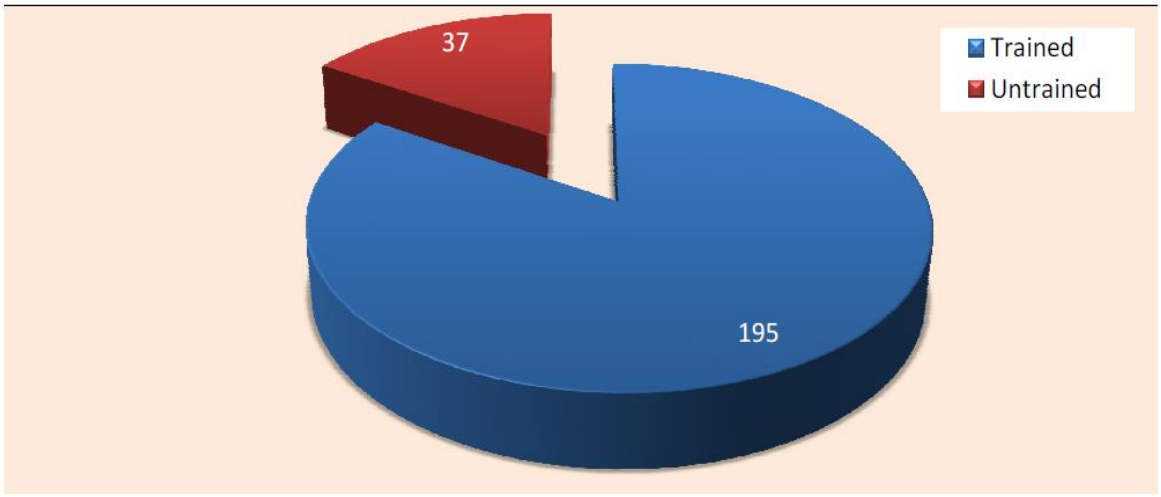

रेखाचित्र

प्रशिक्षण के आधार पर शिक्षकों का वितरण

तालिका

हिन्दी विषय के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता की तुलना

ज्तंपदपदह	छ	डमंद व ि तंदो	ैनउ व ि तंदो	डंदद. ॅीपजदमल न्‌	च.अंसनम	स्मअमस व ि ैपहदपपिबंदबम
ज्तंपदमक	195	121ण13	23620ण00	2705ण00	0ण015	`
न्दजतंपदमक	37	92ण11	3408ण00			

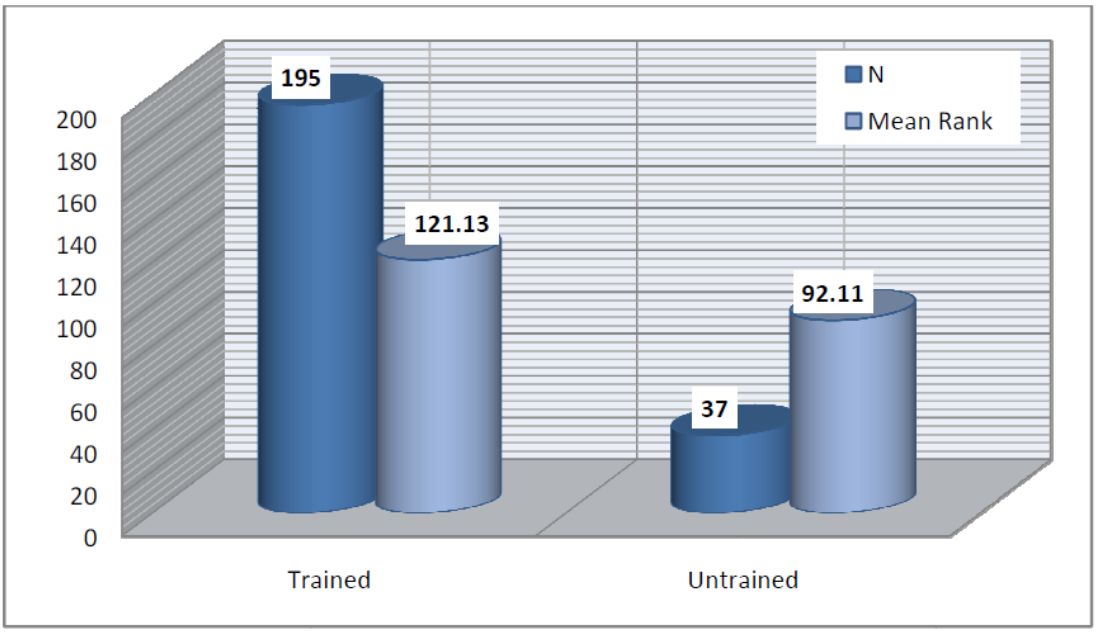

रेखाचित्र

हिन्दी विषय के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता का विवरण

तालिका में प्रस्तुत परिणामों से स्पष्ट है कि प्राप्त डंदद ँीपजदमल न मान 2705ण्00 ;चढ0ण्05द्ध सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः संबन्धित शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित हिन्दी अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर है। चूंकि प्रशिक्षित हिन्दी अध्यापक का डमंद त्ंदा ;121ण्13द्ध अप्रशिक्षित हिन्दी के अध्यापक के डमंद त्ंदा ;92ण्11द्ध से अधिक है। अतः प्रशिक्षित हिन्दी अध्यापक, अप्रशिक्षित हिन्दी अध्यापकों की तुलना में आईसीटी के प्रति अधिक जागरूक हैं।

अध्ययन के परिणाम एवं निष्कर्ष

प्रस्तुत परिणामों से स्पष्ट है कि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित हिन्दी अध्यापकों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर है। अतः प्रशिक्षित हिन्दी अध्यापक, अप्रशिक्षित हिन्दी अध्यापकों की तुलना में आईसीटी के प्रति अधिक जागरूक हैं।

जिसका संभवतः कारण यह हो सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में अध्यापक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों को समझकर एक योग्य शिक्षक बनने की ओर अग्रसर होते हैं। प्रशिक्षण के दौरान अध्यापक को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी से अवगत कराया जाता है एवं वे सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण कार्य भी करते हैं। दूसरी तरफ अप्रशिक्षित अध्यापको की इन साधनों तक पहुँच सामान्य नहीं है। फलस्वरूप, प्रशिक्षित अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता का स्तर अप्रशिक्षित अध्यापकों से ज्यादा होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अग्रवाल वाई. पी. एवं मोहंती, एम. (2006). *मल्टीमीडिया प्रोग्राम लर्निंग की प्रभाविता का तुलनात्मक अध्ययन.* पी–एच.डी (शिक्षाशात्र). गौहाटी विश्वविद्यालय. गौहाटीबेस्ट।

जायसवाल, पी. (2016). *विश्वविद्यालय स्तर पर अध्यापक शिक्षा एवं अन्य विभागों के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता एवं व्यावहारिक प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन.* अप्रकाशित डॉक्टरल थीसिस. काशि हिन्दु विश्वविद्यालय. वाराणसी

हवाइटफील्ड एम. एल. (2010). *सेकेंड्री कक्षाओं के कंप्यूटर सुविधा तथा आदत निर्माण तथा सुविधाजनक कारकों का अध्ययन.* पी–एच.डी (शिक्षाशात्र). न्यूजर्सी विश्वविद्यालय. न्यूजर्सी

वहाब (2013). *कंप्यूटर उपयोग को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन* पी–एच.डी (शिक्षाशात्र). सागर विश्वविद्यालय. सागर